अमेरिका में कार्टून पर नस्ली विवाद

अमेरिका में प्रकाशित एक राजनीतिक कार्टून को लेकर नस्ली विवाद शुरू हो गया है। 'द न्यूयार्क पोस्ट' में प्रकाशित एक कार्टून में एक चिंपांजी को अमेरिकी आर्थिक प्रोत्साहन विधेयक तैयार करते दिखाया गया है जिस पर डेमोक्रेटिक नेताओं ने अखबार के खिलाफ नाराजगी जताई है। डेमोक्रेटिक नेताओं का मानना है कि इस कार्टून में राष्ट्रपति बराक ओबामा का अपमान किया गया है। दक्षिणपंथी 'द न्यूयार्क पोस्ट' द्वारा प्रकाशित इस कार्टून में एक पुलिस अधिकारी अपने साथी को, जिसने अभी-अभी एक चिंपाजी का शिकार किया है यह कहते हुए दिखाया गया है कि उन्हें अगला प्रोत्साहन विधेयक लिखने के लिए किसी अन्य को ढूँढ़ना पड़ेगा। इस पर न्यूयार्क के गवर्नर डेविड ए. पीटरसन समेत अनेक नेताओं ने जाहिर तौर पर माना है कि इस कार्टून में ओबामा की तुलना चिंपांजी से की गई है और यह नस्ली अतीत की याद दिलाता है।

बुश को जूता मारने वाले पत्रकार को तीन साल कैद की सजा

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जार्ज बुश पर जूते फेंकने वाले इराकी पत्रकार मुंतजर अल जैदी को तीन साल कैद की सजा सुनाई गई है। बगदाद की एक अदालत ने जैदी को विदेशी राष्ट्राध्यक्ष पर हमला करने का दोषी ठहराया। जार्ज बुश पर जूता चलाने की घटना पिछले साल दिसम्बर की है। जार्ज बुश पर टीवी रिपोर्टर मुंतजर अल जैदी ने उस समय जूता फेंका था जब वे इराकी प्रधानमंत्री तरी अल मलिकी के साथ संयुक्त संवाददाता सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। बगदाद में सुनवाई के दौरान जजों के पैनल ने सिर्फ 15 मिनिट में मुंतजर अल जैदी को सजा सुना दी, हालांकि जैदी ने अपना दोष स्वीकार नहीं किया। सजा सुनाये जाने के बाद अदालत के बाहर मुंतजर अल जैदी के समर्थकों ने उनके पक्ष में नारे लगाये। सुनवाई के दौरान जैदी ने जजों से कहा कि मेरी प्रतिक्रिया किसी भी अन्य इराकी की तरह स्वाभाविक थी। जैदी के वकील ने भी कहा था कि वे सिर्फ लोगों की भावनाओं का इजहार कर रहे थे। वे वर्ष 2003 में अमेरिका के नेतृत्व में हुए हमले और उसके बाद की घटनाओं से आहत थे। जैदी के वकील ने जजों से अनुरोध किया था कि वे बिना किसी देर के जैदी पर लगे आरोपों को खारिज कर दें। लेकिन जजों ने मुंतजर अल जैदी को तीन साल की सजा सुनाई। वैसे किसी विदेशी नेता के आधिकारिक दौरे के क्रम में उस पर हमला करने के मामले में मुंतजर अल जैदी को 15 साल की सजा हो सकती थी, लेकिन उसे तीन साल की सजा ही सुनाई गई।

आईएफजे ने की मुंतजर अल जैदी की रिहाई की माँग

पत्रकारों के अंतराष्ट्रीय संगठन 'इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ जर्नलिस्ट' (आईएफजे) ने जार्ज बुश पर जूता फेंकने वाले इराकी पत्रकार मुंतजर अल जैदी को रिहा करने की माँग की है। आईएफजे ने कहा कि इराकी पत्रकार जैदी का विरोध पिछले चार सालों तक इराक में अमेरिकी हस्तक्षेप के दौरान इराकी नागरिकों के साथ की गई ज्यादतियों को लेकर उपजे भयानक गुस्से का इजहार है। इसे एक सामान्य नागरिक का विरोध मानते हुए जैदी को रिहा किया जाना चाहिये। इस बीच, विभिन्न देशों में जगह-जगह प्रदर्शन करके लोग जैदी की रिहाई की माँग कर रहे हैं। हालाँकि इराकी अधिकारियों ने कहा कि उस पर इराक के कानून के तहत कार्यवाही की गई है। जैदी की रिहाई के लिए इराक में तो रैलियाँ निकाली जा रही हैं, अरब देशों में भी उसके साहस की प्रशंसा करते हुए उसे तत्काल छोड़ने की माँग की जा रही है। तीन साल की सजा सुनाये जाने से पूर्व भी पुलिस हिरासत में रखे जाने के दौरान जैदी की पिटाई एवं उस पर हो रहे अत्याचार की खबरें भी लगातार आ रही थीं जिसका अनेक संगठनों द्वारा विरोध किया जा रहा था।

अरबी भाषा आधारित मीडिया का तेजी से विस्तार

यूरोप और अमेरिका के देशों में अरबी भाषा आधारित मीडिया का तेजी से विस्तार हो रहा है। अरबी 25 देशों की सरकारी भाषा है साथ ही अंग्रेजी, फ्रेंच के बाद तीसरी बड़ी भाषा है। 9/11 के बाद बड़ी आतंकवादी घटनाओं के पीछे अलकायदा जैसे अरब आतंकियों का हाथ रहा है और उनके विचारों को समझना मीडिया और खुफिया एजेंसियों के लिए हमेशा चुनौती रही है। मीडिया कर्मियों में तेजी से यूरोप एवं अमेरिका के विश्वविद्यालयों में अरबी सीखने की होड़ शुरू हो गयी है। वॉयस ऑफ अमेरिका की अरबी सेवा ने तालिबानी नेता मुल्ला मुहम्मद उमर का बयान प्रसारित किया जिस पर अमेरिकी विदेश विभाग ने कड़ी आपत्ति जतायी। इसके चलते वॉयस ऑफ अमेरिका की अरबी सेवा बंद कर दी गयी। लेकिन इसके तुरंत बाद मिडिल ईस्ट रेडियो नेटवर्क या 'रेडियो सावा' नाम से अरबी सेवा की शुरुआत हुई है जिसका आरंभिक बजट 1 अरब 20 करोड़ डॉलर रखा गया। 'रेडियो सावा' संक्षिप्त समाचार बुलेटिन के साथ-साथ पश्चिम

के पापुलर म्युजिक का प्रसारण 71 देशों को करता है। अभी हाल ही में बीबीसी के साथ-साथ जर्मनी, रूस और फ्रांस के प्रसारकों के बीच अरबी कार्यक्रमों को लेकर तीव्र प्रतिस्पर्धा शुरू हुई है। 'फ्रांस-24' और 'एशिया अलअयूब' में अरबी कार्यक्रमों की लोकप्रियता को देखकर बीबीसी ने अपना अरबी टीवी चैनल प्रारंभ कर दिया है। इससे पहले से ही मध्य-पूर्व से अल आलम, अल-अरबिया, अल हर्दा एवं अल जजीरा जैसे प्रसारक अरबी मीडिया के रूप में लोकप्रिय हैं।

पत्रकार नजम सेठी को गोल्डन पेन अवार्ड

पाकिस्तान से प्रकाशित 'फ्राइडे टाइम्स' और 'डेली टाइम्स' के प्रधान संपादक नजम सेठी को वर्ष 2009 के 'गोल्डन पेन ऑफ फ्रीडम' अवार्ड देने की घोषणा की गई है। वर्ल्ड एसोसिएशन ऑफ न्यूजपेपर्स द्वारा घोषित यह पुरस्कार प्रत्येक वर्ष उन पत्रकारों को दिया जाता है जो मुश्किल हालातों में भी प्रेस की आजादी को बुलंद रखते हैं। इंडियन न्यूज पेपर सोसायटी के अध्यक्ष होरमुजजी एन कामा ने बताया कि पाकिस्तान में कट्टरपंथी गुटों की ओर से श्री सेठी को लगातार जान से मारने की धमकी मिल रही थीं। इन गंभीर और कठिन परिस्थितियों में भी प्रेस की आजादी में उल्लेखनीय योगदान के लिए श्री सेठी को इस पुरस्कार के लिए चुना गया है। नजम सेठी के अनुसार कट्टरपंथी हमेशा ही अपने आलोचकों की आवाज को खामोश करने के लिए ताकत का इस्तेमाल करते हैं और आज भी यही हो रहा है। यह एक ऐसी जंग है जिसमें मीडिया और देश, हार बर्दाश्त नहीं कर सकता। तानाशाही और कट्टरपंथियों की आलोचना की अखबारी संपादकीय नीति के कारण श्री सेठी बरसों से सरकार और धार्मिक गुटों की आँखों की किरकिरी बने हुए हैं। इतने व्यापक विरोध के बावजूद वे कलम की ताकत से विरोधियों का सामना कर रहे हैं एवं प्रेस की आजादी को बनाये रखे हुए हैं इसलिए उन्हें 2009 के 'गोल्डन पेन ऑफ फ्रीडम' अवार्ड से सम्मानित किया गया है।

नेपाल में मीडिया पर हमले की कड़ी निंदा

नेपाल के एक मीडिया संगठन हिमल मीडिया पर माओवादियों के हमले ने पूरे देश में रोष फैला दिया है। मीडिया सोसायटी और एडिटर्स एलायंस ने इस हमले की कड़ी निंदा की है। नेपाली रेडियो एवं टेलीविजन चैनलों ने भी इस हमले की आलोचना की है। माओवादी कार्यकर्ताओं ने नेपाली मीडिया संगठन 'हिमल मीडिया' के प्रधान संपादक कुंदा दीक्षित सहित अन्य पत्रकारों पर हमला किया था। इस हमले में अनेक लोग घायल हुए। मीडिया सोसायटी ऑर एडिटर्स एलायंस के संयुक्त वक्तव्य में कहा गया है कि यह सीधे-सीधे प्रेस की आजादी और लोकतंत्र पर हमला है। एलायंस की बैठक में 'द हिमालयन टाइम्स', 'द काठमांडू पोस्ट', 'कांतिपुर', 'नेपाल समाचार पत्र', 'अन्नपूर्णा पोस्ट राजधानी' और 'हिमालय टाइम्स' जैसे अखबारों ने निर्णय लेते हुए संपादकीय प्रकाशित करने के बजाय उसे खाली रखा। इमेज एफएम नेपाल एवं कांतिपुर टीवी, कांतिपुर तथा कई वेबसाइट्स ने भी इस निर्णय का समर्थन किया। लगभग 300 पत्रकारों ने इस हमले के विरोध में जमकर प्रदर्शन किया। उन्होंने माओवादी सरकार से माँग की कि इस तरह के हमलों को रोका जाये। यह सीधे-सीधे प्रेस की आजादी पर हमला है। उन्होंने कहा कि यदि सत्तारूढ़ दलों से जुड़े कार्यकर्ता इस तरह का हमला करते हैं तो यह और भी खतरनाक और विडंबनापूर्ण है।

श्रीलंका में संपादक की हत्या पर रोष

अंतर्राष्ट्रीय पत्रकार संगठन 'कामन वेल्थ जर्नलिस्ट एसोसिएशन' ने श्रीलंका के प्रतिष्ठित समाचार पत्र 'संडे लीडर' के संपादक लासांता विक्रम तुंगा की हत्या पर रोष प्रकट करते हुए इसे मीडिया की आजादी पर हमला करार दिया है। संगठन ने श्रीलंका सरकार से पत्रकारों की जान की हिफाजत के लिए कदम उठाने की अपील की है। 52 वर्षीय लासांता विक्रम तुंगा श्रीलंका के प्रभावशाली पत्रकारों में से एक थे, विक्रमतुंगा और सरकार के बीच कई विषयों में गंभीर मतभेद थे। वह सरकारी नीतियों और तमिल विद्रोहियों के खिलाफ लड़ाई के बड़े आलोचक थे। उन्हें कई बार जान से मारने की धमकी मिली थी। इसके साथ ही उनकी विवादित खबरों के कारण उन्हें कई बार हिरासत में लिया गया था। उन्होंने अपने आखिरी संपादकीय पर आरोप लगाये थे कि वे सत्ता में बने रहने के लिए युद्ध जारी रखे हुए हैं। विपक्षी दलों की खामोशी के कारण वे उनकी भी आलोचना करते थे। एमनेस्टी इंटरनेशनल के अनुसार वर्ष 2006 से जनवरी 2009 तक श्रीलंका में 10 से अधिक मीडिया कर्मियों की हत्या कर दी गई है। वहीं कुछ का अपहरण कर लिया गया है जो आज तक लापता हैं। इनमें से अधिकांश पत्रकार उत्तर और पूर्वी श्रीलंका के संघर्ष वाले इलाकों में काम कर रहे थे। इन पत्रकारों की हत्या के आरोप में किसी दोषी को सजा मिलना तो दूर किसी को गिरफ्तार तक नहीं किया गया है। ऐसे में श्रीलंका में मीडिया कर्मियों के लिए खबर लिखना किसी जंग से कम नहीं है।

प्रस्तुति : **डॉ. पवित्र श्रीवास्तव**